मीना जनजाति की ऐतिहासिकता एवम् विदेशों में प्रसार

मोहर सिंह मीना
प्रबंधक, भारतीय खाद्य निगम
moher786@gmail.com
7014697306

सारांश

मीना जनजाति विश्व की सबसे प्राचीनतम जनजातियों में से एक है भारत देश में मीना, भील, गोंड संथाल, कोल, उरांव आदि जन जातियां बहुत ही प्राचीन काल से आज तक निवास करती है मीन शब्द द्रविडियन शब्द है जिसका अर्थ है मछली जिसे संस्कृत में मत्स्य कहते हैं। मीना एक प्रोटो-द्रवड़ियन जाति है जो इस धरती पर गुफाओं में निवास करते थे आज मौजूद द्रविडियनों (यानी पाण्ड्यान, चोल, चेरा)की उत्पत्ति मीनावर (मीना) और बिलावर (भील) लोगों से मानी जाती है जिन्होने दक्षिण में अपना साम्राज्य स्थापित किया था बेलूर में मीनाओ का किला बेहद सुदृढ़ था। फादर हैरास व अन्य विद्वानों के मतानुसार सिन्धु सभ्यता मीनाओ द्वारा विकसित सभ्यता थी, जहां से मीना लोग अरब सुमेर, मिस्र, ग्रीस, सीरिया, इथियोपिया, अमेरिका आदि देशों में प्रवास कर गये एवम् वहाँ सभ्यताओं का विकास किया मीणा जाति के प्राचीन समय में विदेशी धरती पर कई देशों में आरम्भिक राज्य मीना लोगो से सम्बन्धित थे मीना प्राचीन काल में समुद्री व्यापारी थे। मीनाद का जिक्र भारतीय कल्चर वॉल्यूम 3 प्रकाशित है जिसमें सिन्धु सभ्यता को मीनाओ से जोड़ा गया है। हरमन गॉट्ज बताते हैं कि मीणा ही प्राचीन मत्स्य है विश्व के प्रसिद्ध इतिहासकारों जैसे ए पी करमाकर, आर एन सेल्टोर, ह्यूग फॉक्स, बी सी लॉ, आन्द्रे डी पनिया गुहा आदि मीनाओ के बारे में विस्तार से वर्णन करते हैं

पेरिप्लस संकेत करता है कि एन्डेमन की स्थापना भारतीय व्यापारियों, मीनाओं द्वारा की गई थी, जिन्हें स्ट्रैबो ने मिनियन कहा है, प्लिनी ने मिनियन को सबसे प्राचीन व्यापारिक लोग बताया है मीनो ही मिनोअन है ह्यूग फॉक्स के अनुसार उत्तरी व दक्षिणी अमेरिका भी मीनाओ के उपनिवेश थे नागा लोग जाति मीना की उप शाखा है

मीनाओ के आमेर, बूंदी, नाँदोल, मेवल, वेलूर, औड्डवड्डी सहित कई जगह राज रहे हैं सतपथा ब्राह्मण में मत्स्य राजा समादा और मत्स्य राजा ध्वैसन द्धैतवन का वर्णन है रेसियल हिस्ट्री ऑफ इंडिया में चंद्रा चक्रवर्ती लिखते हैं कि मीना लौग ऋग्वेद के संयुक्त विकास कर्ता थे मीना राजपुत्र से ही राजपूत शब्द की उत्पत्ति हुई है राजपूतों को प्रतिभाशाली मीना भारतीयों के निडर रिती रिवाज विरासत में मिले थे विदेशी धरती पर कई देशों में आरम्भिक राज्य मीना लोगो से सम्बन्धित थे मीना प्राचीन काल में समुद्री व्यापारी थे प्रोटो-द्रविड़ मीना जाति के लोग कई शानदार राष्ट्रों की माँ (निर्माता) थी जिन्होंने भारतीय सभ्यता को "सात समुद्रों" के पार फैलाया। मीना मूल के भारतीयों और मिस्रवासियों के आदिम धर्मों के बीच सामंजस्य, दोनों लोगों की पूर्व एकता का प्रमाण है, या यूँ कहें कि इस बात की पुनः पुष्टि है कि मिस्रवासी केवल भारत के क्षेत्रों से आए प्रवासी थे, जो "राष्ट्रों की महान जननी" है अतः भारतीय मीना जाति का इतिहास बहुत प्राचीन और गौरवपूर्ण है

मीना जनजाति की ऐतिहासिकता एवम् विदेशों में प्रसार

मोहर सिंह मीना
प्रबंधक, भारतीय खाद्य निगम
moher786@gmail.com
7014697306

परिचय -- मीना जनजाति अत्यन्त प्राचीन है। वेदों में वर्णित 'मेनिह' मेना शब्द इसी जनजाति का सूचक है। 'मेनिह' का अर्थ वज्र या वज्रकाय होता है। मीना जनजाति का नामकरण इसी अर्थ में किया गया है। साहित्यिक साक्ष्यों के अनुसार जिस जाति का शरीर वज्र के समान होता है उसे मेंना, मैंना मारण ,मीणा और मीना कहते हैं। इस नाम से इस जाति के असीम पराक्रम और धैर्य का पता चलता है। पूर्वकाल में मीना जनजाति के राजाओं के हाथ में वज्र या मुकुट तथा ध्वजा में मछली का चिन्ह होता था। मीन् शब्द द्रविडियन शब्द है जिसका अर्थ है मछली जिसे संस्कृत में मत्स्य कहते हैं मीना (मछली टोटेम लोग) एक प्रोटो-द्रवड़ियन जाति है द इनसाइक्लोपीडिया इण्डिका शब्दकोश के अनुसार मीना, राजपूताने की युद्ध प्रिय जाति का नाम है। राजस्थान मे मीना जनजाति जो संख्या के हिसाब से भारत मे चौथी सबसे बडी़ जनजाति है (1961 में 11,56,000) मीना प्राचीन काल में समुद्री व्यापारी थे ,ये कई शानदार राष्ट्रों के निर्माता थे जिन्होंने भारतीय सभ्यता को "सात समुद्रों" के पार फैलाया।

मुख्य शब्द- मीना, मत्स्य, मछली, मिनावर, मिनोअन, मेर, अन

ऐतिहासिकता- भारत देश में मीना जनजाति बहुत ही प्राचीन काल से निवास करती है जो कि ऋग्वेद 7.18.6, शतपथ ब्राह्मण 13.5.4.15, 13.4.3.13 कौषीतकी उपनिषद 4.1 में वर्णित है। उत्तरी भारत पर आर्य आक्रमण: नृवंशविज्ञान और इतिहास पर एक निबंध में जेम्स कैनेडी द्वारा मीना और भीलो को इस देश में सबसे पहले विचरण करने वाले लोग बताया है।[1] धरती के मूलनिवासियों में आमेर के मीना, मेरवाडा के मेर ,मेनदेश के मनस, कोलवान के कोल ,गोडवाना के गोन्ड,शामिल है[2] मत्स्य या मीनाओ, जिन्होंने दस राजाओं की लड़ाई में भाग लिया था[3],मार्शल सोचता है कि ये प्राचीन काल में इस धरती पर गुफाओं में निवास करते थे[4] मीना जनजाति सौरवंशजों (सूर्यवंशी) लोगों से 5000 वर्ष से अधिक पुरानी है[5] , वे हिंदू धर्म के दायरे से बाहर हैं, भारत के आदिम समुदाय हैं[6]

रेसियल हिस्ट्री ऑफ इंडिया में चंद्रा चक्रवर्ती लिखते हैं कि मीना (मिनोअन) लोग ऋग्वेद के संयुक्त विकास कर्ता थे(8.85.67) उन्होंने अदिति से प्रार्थना की: "व्यापक-शासन करने वाली और दूर तक फैलने वाली हमारी संतान को सुरक्षा प्रदान करें ताकि वे जीवित रहते हुए विस्तार कर सकें (6, 56 (67), 12)। मत्स्यो के बसने से जयपुर क्षेत्र को प्राचीन काल में मत्स्य कहा जाता था। मीना राजपुत्र से ही राजपूत शब्द की उत्पत्ति हुई है[7] राजपूतों को प्रतिभाशाली मीना भारतीयों के निडर रिती रिवाज विरासत में मिले थे[8] श्री ए. डी. पैनियागुआ (पेरिस) के अनुसार भारत के मूल निवासी मीना लोग लम्बे हैं तथा अन्य मूल निवासियों की तुलना में कहीं अधिक श्रेष्ठ हैं।

उनके नाम "मीना" का अर्थ है "चमकने वाले", इतिहासकार विलियम स्मिथ के अनुसार राजपूत प्राचीन जाट ,अहीर ,गुर्जर ,मीना जाति के वंशज है[9]

वेलूर दक्षिण भारत में मीना जनजाति का एक राज्य था। वेलूर के आसपास के पहाड़ स्पष्ट रूप से किलेबंद थे,कहा जाता है कि वे वेलूर में शासन करने वाले राजवंश की ताकत थे।[10] मोहनजोदड़ो की सरकार धर्मतंत्रात्मक थी। ईश्वर को देश का राजा माना जाता था। राजा केवल ईश्वर की ओर से प्रशासक था और उसे "किसान" की उपाधि प्राप्त थी, मीना, जो देश में है, तीन आँखों वाली मछली की पूजा करते थे।

सत पथा ब्राहमण में मत्स्य राजा समादा और मत्स्य राजा ध्वैसन द्धैतवन का वर्णन है हरमन गॉट्ज बताते हैं कि मीना ही प्राचीन मत्स्य है[11] परंपरा और इतिहास में मीना, में आर.एन. सेल्टोर द्वारा कहा है कि, मत्स्य कोई और नहीं बल्कि मीना थे।[12] ए पी करमाकर के अनुसार मत्स्य शब्द मीना का संस्कृत रूप है, मीनाओ के मूलनिवास स्थान हड्डप्पा मे मनु के उतरने की बात कही जाती है भारत युद्ध ने कई द्रविड़ राजघरानों को करारा झटका दिया, जिनमें से मीना परिवार भी एक था। उनकी राय में मीनाओं को यह नाम इसलिए दिया गया या यूँ कहें कि उन्होंने यह नाम इसलिए ग्रहण किया क्योंकि वे शिव के मछली-प्रतीक (अन) के प्रत्यक्ष उपासक थे। मछली मोहनजोदड़ो राशि चक्र के आठ नक्षत्रों में से एक थी - ये आठ नक्षत्र शिव के आठ रूप हैं।

स्कंद पुराण के एक अंश में, शिव को इस प्रकार संबोधित किया गया है, कि वह मीना का राजा है।

'मिनाय मिन नाथाय * मीना, जो मीनो के नाथ/स्वामी है*

(स्कंद पुराण, महेश्वर खंड अध: 17)

इसी पुराण में 'तीन नेत्रों वाले मत्स्य' (मछली) का उल्लेख मिलता है। इसके अतिरिक्त, कालिका पुराण, अन (शिव) के मत्स्य-रूप पर अद्भुत प्रकाश डालता है। कि कामदेव ने, जब शिव के आशीर्वाद से पुनर्जन्म लिया, तो कामरूप में मणिकूट पर्वत के पूर्व में स्थित मत्स्यध्वज-पर्वत पर अपने मत्स्य रूप में शिव की मूर्ति स्थापित की। (स्कंद पुराण प्रभास खंड अध: 255,)

हेरास के अनुसार मोहनजोदड़ो की मोहरो' (इन्स्क्रिप्शन) के अनुसार में शिव की पहचान हमेशा मछली से की जाती है सभी आदि भारतीय राजाओं को मीना कहा जाता है,यह केवल एक उपाधि है।[13]

मत्स्यों / मीनाओं का मानना था कि स्पष्टतः उन्होंने मछली का प्रयोग या तो कुलदेवता के रूप में या कम से कम प्रतीक के रूप में किया होगा। लेकिन सौराष्ट्र के जेठवों जैसे आधुनिक राजवंश ने भी मछली को राजवंशीय प्रतीक के रूप में प्रयोग किया था आर. एन. सेल्टोरे के अनुसार कलिंग के कदंब, मदुरा के पांड्य और उच्चंगी के पांड्यों के पास भी मत्स्य लांछना (टोटेम) था। [12]

वी कनकसाभाई के अनुसार तमिलकम में रहने वाली सबसे प्राचीन जन जातियाँ विल्लावर और मिनावर थीं। विल्लावर या धनुर्धर (द्रविड़ शब्द विल, जिसका अर्थ धनुष है) और मिनावर या मछुआरे (द्रविड़ शब्द मीन, जिसका अर्थ मछली है) ये दोनों जन जातियाँ स्पष्ट रूप से एक आदिम जाति थीं जो पूरे भारत में फैली हुई थीं, आज मौजूद द्रविडियनों (यानी पाण्ड्यान, चोल, चेरा की उत्पत्ति मीनावर (मीना) और बिलावर (भील) लोगों से मानी जाती है जिन्होंने दक्षिण भारत में अपना साम्राज्य स्थापित किया था [14]

. रामायण में उत्तरी मत्स्य (उत्तरान् वीर-मत्स्यानाम) के भारुण्डावन वन का उल्लेख है और इसे सरस्वती नदी के उत्तर में स्थित बताया गया है। विष्णुधर्म पुराण में कहा गया है कि त्रिगर्त, मीना और कौलुत के देश भारत के उत्तर-पूर्वी दिशा में स्थित हैं। मीनाओं पूर्वजों ने पश्चिम की आदिम सभ्यता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। यदि हम भौगोलिक नामों का उल्लेख करें तो अर्मीनिया भी उनका नाम रखता है।[15]

आमेर की स्थापना ईसा की प्रथम सदी मे हुई जयपुर की पूर्व राज माता गायत्री देवी के अनुसार जयपुर महाराज ने हमें बताया कि जब उनके पूर्वज पहले पहल जयपुर आये थे तो यह महल (आमेर) स्थानीय मीणा जाति के अधीन था जिनसे इनके पूर्वजों ने जीता था[16]

जनरल क्रीघ देवली इररगूलर फोर्स के मुखिया,अपनी आत्मकथा में मीनाओ के बारे में लिखते है कि मीना लोग निम्न लिखित सूत्र द्वारा एक-दूसरे को अपनी आदिम भूमि की याद दिलाते हैं कि :-

"राजा अपने हिस्से का मालिक है, हम(मीना) भूमि का मालिक है।[17]

राजपूताना के मीनाओं के बीच एक कहावत है कि राजा अपनी उपज के हिस्से का मालिक होता है, लेकिन मीना जमीन का मालिक होता है।[17A] राजपूत प्रमुख विभिन्न तरीकों से भूमि पर आदिवासियों के आदिम अधिकार को स्वीकार करते थे। उदाहरणार्थ- जब राज्य का कोई नया शासक स्थापित होता था तो तिलक या संप्रभुता का प्रतीक (माथे पर लगाया जाने वाला एक छोटा सा लाल धब्बा) एक आदिवासी(मीना /भील) के पैर के अंगूठे से लिए गए रक्त से लगाया जाता है,इससे पता चलता है कि प्रथम श्रेणी के ये हिंदू राजकुमार अपनी संप्रभुता की उपाधि को तब तक अधूरा मानते हैं जब तक कि मूल स्वामी उनके लिए अपना खून बहाकर इसे स्वीकार नहीं करते।[18] जयपुर में, हर सिंहासन परिवर्तन पर, एक मीना ही अपने कबीले के संप्रभु अधिकारों के प्रतीकात्मक हस्तांतरण के रूप में माथे पर टीका लगाने की रस्म निभाता है[18A]

मेर मीनाओ की एक शाखा है जो उनके मूल निवास स्थान सिंधु नदी के तट पर पाए जाते थे काठियावाड़ के अधिकांश राजपूत प्रमुख उस प्रांत के मेर विजेताओं के वंशज हैं। मीना संभवतः सिंध में रहने वाली आदिवासी जनजाति मुहाना का प्रोटो-टाइप रहे होंगे, जो निस्संदेह काठियावाड़ के मियाँनाओं के समान थे। "यह लोग संभवतः सिंध और काठियावाड़ दोनों में मिनानगर नामक पुराने शहरों और मिआनी शब्द के लिए जिम्मेदार थे, जो अभी भी सिंध में उनके मछली पकड़ने वाले गांवों के लिए इस्तेमाल किया जाता है, सिंधु घाटी सभ्यता, पहले उन्नत समाजों में से एक, जो अब मीना मातृभूमि के कुछ हिस्सों में स्थित थी। प्राचीन काल में,आधुनिक राजस्थान के

अधिकांश भू भाग पर मछली प्रतीक वाले मीना राजवंश का शासन था,। अपने लंबे इतिहास में आक्रमणों के बावजूद, मीनाओ को कभी भी आत्मसात नहीं किया गया और उन्होंने अपनी पारंपरिक संस्कृति को बरकरार रखा है। मीना संस्कृति में महिलाओं को आधुनिक भारत की तुलना में अधिक अधिकार दिए गए हैं। विधवाओं और तलाक शुदा लोगों का पुनर्विवाह एक आम प्रथा है और मीना समाज में इसे अच्छी तरह से स्वीकार किया जाता है[19]

मछली मीनाओ का टोटेम था ,विष्णुधर्मोत्तर ग्रंथ में कहा गया है मत्स्य देश और कश्मीर में मछली की पूजा की जाती थी, प्राचीन काल में इसे 'अन' के साथ जोड़ा जाता था और इसे प्रजनन क्षमता का प्रतीक माना जाता था। ओड्डावदि के मत्स्य वंश के प्रतीक चिह्न में मछली शामिल थी,कलिंग के कदंबों ने इस प्रतीक को अपनाया। [20]

राठ (जयपुर राज्य) में हुए उत्खनन से यह जानकारी मिली है। चित्रणों में माँ-देवी को चित्रित किया गया है जो मछलियों की एक जोड़ी लेकर पूरी तरह सामने खड़ी हैं ,मिट्टी के बर्तनों में एक पट्टिका जो 'एक महिला और एक पुरुष का प्रतिनिधित्व करती है मुकुटधारी महिला आकृति जो पुरुष से लंबी महिला उसके दाहिनी ओर खड़ी है और उसका हाथ युवक का सिर पर रखा है मानो आशीर्वाद दे रहा हो। वह पुरुष आकृति अपने बाएं हाथ में मछलियों का एक जोड़ा पकड़े हुए दिखाई दे रहे हैं, जो आमतौर पर एक प्रतीक होता है माँ-देवी के हाथ में देखा गया[21]

हरमन के दृष्टिकोण से आरंभ में पारुहोंग ने जब दुनिया का निर्माण किया उसने सबसे पहले पानी बनाया. फिर उसने पानी से धरती को बनाया। उसने धरती पर रहने के लिए मनुष्य और बाद में जानवरों का निर्माण किया। पहला पुरुष मीना था जिसका अर्थ है "आदमी", जिसे होदज़ा भी कहा जाता है, और पहली महिला सिमनीमा, जिसका अर्थ है "महिला"।[22]

मत्स्यों ने महाकाव्य काल के समान ही भूभाग पर कब्ज़ा किया था, जैसे कि अलवर, भरतपुर, जयपुर, मत्स्य की राजधानी जयपुर के वैराट में थी।[23] घर से भागते समय राजकुमार बुद्ध मीनाओं के देश में आये थे।[24] मीनाओ के आमेर बूंदी नाँदोल मेवल वेलूर औड्वड्डी धारवाड़, वेलूर मिदनापुर सहित कई जगह राज रहे हैं आमेर् भारत का एक शहर, राजपूताना एजेंसी में जयपुर राज्य की प्राचीन राजधानी था आमेर का नाम पहली बार टॉलेमी द्वारा उल्लेखित किया गया है। इसकी स्थापना मीनाओं ने की थी[25]

मेव परंपराओं के अनुसार अलवर के अजानगढ़ में रहने वाले टोडरमल उनके नेता थे। उनका अकबर के साथ संघर्ष हुआ। अकबर ने राजस्व संग्रह के लिए राव बाँदा मीना के नेतृत्व में उनके खिलाफ अभियान भेजे।[26]

मीना बारह बहि-विवाही कुलों में विभाजित हैं, जिनका नेतृत्व एक मुखिया (मुकद्दम) और कबीले के सदस्यों की एक परिषद (पंच) करती है। वे पितृवंशीय वंश से जुड़े हैं लंबे कद वाले मीना, भारत की अन्य मूल निवासियों की तुलना में कहीं अधिक श्रेष्ठ हैं। जयपुर राज्य के प्राचीन स्वामी मीना हैं, जो महान आदिवासी जातियों में से एक हैं। ढौंधार के मीना पुचवारा नामक पाँच बड़ी जनजातियों में विभाजित थे और

अजमेर से दिल्ली तक, पूरी कालीखो पर्वतमाला को समाहित करते हुए एक विशाल राज्य पर शासन करते थे।[27] मत्स्य, एक अन्य नाम से प्राचीन यादव थे - इसलिए उन्हें पंचालों में शामिल किया गया था। ।[28]

मीना एकमात्र जनजातीय समूह है जिसे प्रोटो नॉर्डिक के रूप में पहचाना जाता है। मीना मूल निवास राजस्थान के अलवर, भरतपुर, सवाई माधोपुर, जयपुर, सीकर और टोंक ज़िलों में स्थित है।[29]

मोहनजोदड़ो की आबादी का बड़ा हिस्सा मीनाओं का देश था,दक्षिण भारत में भी राज्य था। वेलूर इसकी राजधानी थी। इन सभी मीनाओं के राजा को मिनावन की उपाधि मिली हुई थी ये पहली शताब्दी ईस्वी से मदुरै के पांड्या राजाओं की उपाधि थी, जो परंपरा के अनुसार उत्तर से आए थे। पाण्ड्य राजाओं के अनुदान पर लगी मुहर पर दो मछलियों का प्रतीक चिह्न बना होता था, जिनके बीच में एक बेंत होती थी।[30]

मीनाओ में लिगं पूजक और नाग पूजक सर्प-पूजक जातियाँ थीं मीनाओ की एक शाखा में पाँच नाग राजाओं के वंशज भी है[31] जिन्होंने भारत के प्रमुख राज्यों पर शासन किया था। आर्कटिक जाति की मत्स्य शाखा का एक संप्रदाय नाग भी है[32]मिनोअन और फिनोशियन के झण्डे पर भी मछली का चिन्ह/ लांछना था[33] जैसा कि मीनाओं के झण्डे पर होता था मिनोअन और मीना समानार्थी है [34] अरब का मिनाई मीना का बहुवचन है

1924 में भारतीय ऐतिहासिक अभिलेख आयोग के समक्ष पढ़े गए एक पेपर में, कोलंबो विश्वविद्यालय के प्रोफेसर पी. जे. थॉमस ने कहा कि इस पूर्वी तट हिंदू परंपरा के अनुसार मज़्दाई, मत्स्य जाति के थे। मत्स्य को संस्कृत में मत्स्य और तमिल में मस्सा या मीन कहा जाता है। मत्स्य प्राचीन काल में भारत में एक प्रसिद्ध लोग थे। मार्कंडेय पुराण में उनका एक हिस्सा पूर्वी भारत में पाया जाता है और मद्रास देश के हिस्से में है। मज़्दाई की रानी तृतीया और उनके बेटे विसन क्रमशः तारा-देवी और विसायन (विजयन) हैं। विसन की पत्नी, राजकन्या मनशर, मीनाक्षीवरु हैं।[35] दक्षिण भारत के प्रमुख मछुआरा समुदाय कोचीन और त्रावणकोर के वलन और अरायन हैं, इसके अतिरिक्त मद्रास प्रेसीडेंसी के बागाटा हैं; तथा शिकारियों और पक्षियों को पकड़ने वाली प्रमुख जनजातियाँ कोचीन, त्रावणकोर और मद्रास के वेट्टुवन और त्रावणकोर और कोचीन के उल्लाटन हैं

मछली का प्रतीक मीनाओं (मत्स्यों) के अपने निवास स्थान (वर्तमान) राजस्थान से पूर्वी तट पर विशाखापट्टनम तक के ऐतिहासिक प्रवास का संकेत देता है[36] विशाखापट्टनम जिला और उसके आसपास के क्षेत्र को पहले "मत्स्य देश" के नाम से जाना जाता था। इस पर शासन करने वाले प्रमुख मत्स्य थे, जिनके वंश के संस्थापक को मीनाओ (मत्स्यों) का वंशज कहा जाता है। विशाखापट्टनम के मडगोले ज़मींदार मत्स्यों के वंशज होने का दावा करते हैं। उनका सिंहासन मछली के आकार का ध्वज पर एक मछली है। उनके हस्ताक्षर एक मछली का प्रतीक हैं, उनके आश्रित भी मछली के आकार के कुंडल कानों में पहनते हैं।

यूरोप के शुरुआती ईसाइयों ने भी मछली को अपने प्रतीक के रूप में कैसे अपनाया था। ईसाइयों को शुरुआती दिनों में सताया जाता था, उन्हें ऐसा तरीका ढूँढ़ना पड़ता था जिससे किसी साथी ईसाई के दफ़न स्थल का पता आसानी से लगाया जा सके और उनके मूर्तिपूजक उत्पीड़कों को इसकी जानकारी न मिले इसलिए मछली के प्रतीक को अपनाया गया और कब्रों पर मछली की आकृति अंकित की गई। ग्रीक शब्दों जीसस, क्राइस्ट, ईश्वर का पुत्र, उद्धारकर्ता के पहले अक्षरों से संयोगवश ग्रीक शब्द इचथस (मछली) बना और इसी से यह प्रतीक बना।[37]

मत्स्य जाति के नाम के इर्द-गिर्द भारतीय काव्य की स्मृतियों में मिथकों का एक विशेष चक्र रचा-बसा है, जो आधा धार्मिक और आधा ऐतिहासिक है, जहाँ मछली का प्रतीक प्रमुख है और एक विशिष्ट स्थान रखता है, मत्स्य की उस श्रेष्ठतम कथा जो जल प्रलय के रक्षक मछली की थी मत्स्य लोगों के ज्ञानी या पादरी, आदिम चाल्डिया के लोगों की तरह, सभी खगोलशास्त्रियों से ऊपर थे; उनके नाम से प्राप्त वैज्ञानिक पुस्तकों का वर्तमान वेदों, शुद्ध आर्यों के वेदों से कोई लेना-देना नहीं था; बल्कि वे लुप्त वेदों, क्षुद्रों के वेदों, शिल्पशास्त्रों, ज्योतिषियों और खगोलशास्त्रियों के वेदों से संबंधित थे, भारत की सबसे प्राचीन वैज्ञानिक प्रणाली के इस पौराणिक भंडार का ज्ञान मत्स्यों से ब्राह्मणों तक पहुँचा। ।[38]

ए पी करमाकर के अनुसार मत्स्यों (मीनाओं) ने वास्तव में भारत के इतिहास में एक महान भूमिका निभाई। प्रारंभिक भारतीय साहित्यो में भी मत्स्यों का निवास हड़प्पा और आसपास के क्षेत्र में बताता है, न कि परवर्ती बैराट में, जहाँ वे बाद में स्थानांतरित हुए प्रतीत होते हैं। प्राचीन काल में मत्स्यों के उत्तरी और दक्षिणी देशों का उल्लेख है। इस सिध्दांत की पुष्टि करते हुए कि मीणा मूल रूप से उत्तरी भारत के निवासी थे रामायण में भारुंडवन या वीर मत्स्य वन का वर्णन सतलुज नदी के दक्षिण में तथा सरस्वती नदी के उत्तर में स्थित बताया गया है। कुमार व्यास की कन्नड़ महाभारत में मत्स्यों के दक्षिणी देश का वर्णन भी हमारे दृष्टिकोण की पुष्टि करता है। भरत युद्ध ने कई व्रात्य राजघरानों को करारा झटका दिया, जिनमें मीणों का परिवार भी एक था[39]

<u>विदेशों में प्रसार</u> ---

सिंधु घाटी सभ्यता एक सतत सभ्यता थी, जहाँ तक इसमें पूर्व-वैदिक और उत्तर-ऋग्वेदिक दोनों काल सम्मिलित हैं। मीना और पणि की प्रारंभिक जनजातियों ने सक्रिय रूप से विदेश यात्राएँ कीं और भारत की स्वदेशी संस्कृति को प्रारंभिक सुमेर, मिस्र, क्रीट, स्पेन, पुर्तगाल, इंग्लैंड और आयरलैंड में फैलाया। प्रागैतिहासिक काल में नई दुनिया निश्चित रूप से पुरानी दुनिया का हिस्सा थी। मिनोअन और संबंधित मीना (मछली) जनजातियों ने न केवल भूमध्य सागर बल्कि इंडो-चीनी तट, प्रशांत और अटलांटिक पर भी उपनिवेश स्थापित किया और नियंत्रण किया। इन जनजातियों की एक विश्व संस्कृति थी, डायोडोरस सिकुलस के अनुसार, ये अमेज़ॅन "हेस्पेरा" नामक एक द्वीप पर रहते थे, जो "ट्रिटोनिस" नामक दलदल में स्थित था। उन्होंने मेने नामक एक शहर को छोड़कर पूरे द्वीप पर विजय प्राप्त की, "इथियोपियन इचथियोफैगी द्वारा बसाया गया।" मेनेस

मिस्र के पहले राजवंशीय राजा मेना का ग्रीक नाम है। प्रोटो-द्रविड़ियन में, राजा के लिए सामान्य शीर्षक मिन है; मिनोस क्रेते के शुरुआती राजाओं का शीर्षक था जिससे मिनोअन शब्द निकला है और मिनास उन भारतीय जनजातियों में से एक थे जो मेसोपोटामिया/उत्तरी भारत से बाहर चले गए और यमन में बस गए, और उनका कबीले का चिन्ह (टोटेम) मछली था। इथियोपियाई इचथियोफैगी का मतलब बस इथियोपियाई मछली खाने वाले थे! संस्कृत में मिस्र के राजतंत्र के संस्थापक राजा मेनेस वास्तव में राजा मीना थे। मेनेस हेलेनाइज्ड रूप है और, यह पता चलता है, "मीना और मिनोस दोनों नाम नहीं बल्कि केवल उपाधियाँ थी।" राजा मीना का अपना व्यक्तिगत नाम अहो था।" राजा मिनोस/ मीना राजा कहना उपाधि मिनोस/ मीना/ मिनथा मोहनजोदड़ो में जो मीनाओं का असली "गृह बंदरगाह" , था लगभग हर मुहर पर बैल बने हुए थे यह पूरी सिंधु घाटी का "गृहनगर-टोटेम" था। फादर हैरास व अन्य विद्वानों के मतानुसार सिन्धु सभ्यता मीनाओ द्वारा विकसित सभ्यता थी जहां से मीना लोग अरब सुमेर मिस्र ग्रीस सीरिया इथियोपिया अमेरिका आदि देशों में प्रवास कर गये एवम् वहाँ सभ्यताओं का विकास किया मीना जनजाति वह जनजाति थी जो भारत छोड़कर मेसोपोटामिया, ईरान और अनातोलिया में बस गई थी यह वही जनजाति थी जो सिंधु घाटी छोड़कर फारस की खाड़ी तक आई थी, पूर्व-राजवंश काल में मिस्र में प्रवेश किया और ऊपरी साम्राज्य की स्थापना की ऊपरी मिस्र का नागा शहर एक मीना शहर था। नागा, मीना जनजाति की एक उप-जाति थी यह आज भी दक्षिण लीविया के रेगिस्तान में मौजूद है। यह वहीं मीना थे जो निचले मिस्र मे बसे और प्राचीनगर गेरजियन संस्कृति की स्थापना की, यह मीना ही थे जिन्होंने सार्डिनिया और माल्टा मे मेगाथिलिक कब्रे बनवाई थी उत्तरी अफ्रीका बिटनी इग्लैण्ड और अमेरिका दक्षिण पश्चिम में किवास बनवाये उन्होंने तियाहुआना को और कदम टियोतिहुआकान की स्थापना की चाविन् मीनाओं का शहर था उनके वंशज प्रोटो होपिस, प्रोटो माया, प्रोटो इन्का, प्रोटो एज्टेक, टोलटक थे यह सब भारत मे शिरू हुआ था मिनोअन और संबंधित मीनास (मछली) जनजातियों ने न केवल भूमध्य सागर पर उपनिवेश स्थापित किया और उसे नियंत्रित किया, बल्कि इंडो-चीनी तट, प्रशांत और अटलांटिक पर भी कब्जा किया। मीना प्राचीन काल में समुद्री व्यापारी थे मीना जाति के प्राचीन समय में विदेशी धरती पर कई देशों में आरम्भिक राज्य मीना लोगो से सम्बन्धित थे मीनास समुद्री व्यापार के लिए समर्पित प्रोटो- मीना जनजाति वह भारतीय राष्ट्र की एक जनजाति थी, का एक वर्ग अरब प्रायद्वीप में यमन में बस गया, जहां उन्हें स्ट्रैबो द्वारा मिनाई कहा जाता था एक अन्य समूह महाद्वीपीय ग्रीस में स्थापित किया गया था, जिसे हेरोडोटस द्वारा मिन्ये कहा जाता था भारत को मीना देश माना, इलियड्र और ओडेसी के लेखक होमर भारत को मीनाओं की मूल मातृ भूमि मानते हे (एस्कानिया का हवाला देकर) ग्रीस शायद भारत के प्राचीन मीनाओं के प्राचीन उपनिवेश थे और यह कहने का कारण है कि मेसापोटामिया के सुमेरियन प्राचीन मिश्र के लोग, सिरिया के हित्ती, कोळीशियन, कीर के मिनोअन और महाद्वीप के माइनेसियन इटली के एट्रस्केन और सोन के इबेरियन महान प्रोटो इण्डियन परिवार की शाखाए थी वे स्पेन से दूर आयरलैण्ड तक गये। मीनाओ (मीनाइयों) के पास एक स्वतंत्र लेखन था जो जाहिर तौर पर मोहनजोदड़ो की मोहरो' (इन्स्क्रिप्शन) की प्रोटो-इंडियन लिपि का विकास है।, इसलिए पंट देश , जहाँ से शुरुआती मिस्र

वासी नील नदी की भूमि पर आए थे, जहाँ ऐसे लोग रहते थे जो सभी साक्ष्यों के अनुसार मूल रूप से भारत से आए थे। आरंभिक मिस्र वासी अनु जाति के ही थे मिस्र में पहले राजा ने भी मीना की उपाधि धारण की थी, जिसे प्रोटो-भारतीय राजाओं ने धारण किया था इसलिए भारत के अनु के उपासकों और मिस्र के अनु के बीच नस्लीय संबंध के बारे में कोई संदेह नहीं है। वे सभी प्रोटो-द्रविड़ जाति के थे, जो कई शानदार राष्ट्रों की माँ थी जिन्होंने भारतीय सभ्यता को "सात समुद्रों" के पार फैलाया। पेरिप्लस संकेत करता है कि एन्डेमन की स्थापना भारतीय व्यापारियों, मीनाओं द्वारा की गई थी जिन्हें स्ट्रैबो ने मिनाई कहा है, प्लिनी ने मिनोअन को सबसे प्राचीन व्यापारिक लोग बताया है मीना ही मिनोअन है ह्यूग फॉक्स के अनुसार उत्तरी व दक्षिणी अमेरिका भी मीनाओ के उपनिवेश थे मोहनजो-दारो में, शायद मिनस का असली "घरेलू बंदरगाह", व्यावहारिक रूप से हर मुहर पर बैल हैं। यह "गृहनगर-टोटेम" है[40] मिनोअन और फिनोशियन का लांछना भी मछली का चिन्ह था[41]

जब फादर हैरास की मोहनजोदड़ो की खोजों की पहली बार दुनिया में घोषणा की गई, तो उत्तरी भारत और सुमेर के बीच कुछ असाधारण संबंधों की ओर कई पुरातत्वविदों और मानव विज्ञानियों का तुरंत ध्यान आकर्षित हुआ। दोनों लिपियों के बीच समानताएँ अत्यंत उल्लेखनीय थीं। कई पुरातत्वविदों और मानव विज्ञानियों के अनुसार, सुमेर के लोग वास्तव में उसी भूमध्यसागरीय प्रजाति के थे, जिसकी एक शाखा मात्र प्रोटो -द्रविड़ लोग थे।, जिसका अर्थ है "चमकता हुआ", "प्रसिद्ध"। सिंधु घाटी के मोहरो में पाए गए प्रोटो - भारतीय राजाओं को "मीना" की उपाधि प्राप्त थी मीना जनजाति जिसे यह उपनाम इसलिए दिया गया क्योंकि वे हमेशा असली मछलियों की तरह समुद्री यात्रा करते थे। यमन के मीना वासियों की एक स्वतंत्र लिपि थी, जिसे सिंधु घाटी की प्रोटो-भारतीय लिपि का विकास माना जाता है। प्रारंभिक मिस्रवासी अनु जाति के ही थे, सुमेरियों ने स्वयं अपनी प्राचीन परंपराओं में याद किया कि उनके देश की सभ्यता और लेखन कला पूर्व से आए थे। सूचना स्रोतों के अनुसार, उनका दावा है कि बहुत प्राचीन काल में इस देश में कोई सभ्यता नहीं थी और इसके लोग जंगली जानवरों जैसे थे। कुछ लोग पूर्व से समुद्र के रास्ते आए और उन्हें सभ्यता और लेखन कला सिखाई। पहली शताब्दी ईसा पूर्व में इन "सभ्य लोगों" का स्वरूप मिथकीय हो गया था, और चूँकि वे समुद्र के रास्ते आए थे, जो कि उस प्रारंभिक काल में बहुत ही असामान्य माना जाता था, इसलिए उन्हें आधे मनुष्य और आधे मछली कहा जाता था। फिर भी, बेरोसस के वृत्तांत को पढ़ते हुए यह स्पष्ट होता है कि ये प्राणी, हालाँकि मछलियों के रूप में वर्णित थे, वे मनुष्य थे जो तर्क करते थे, बोलते थे, लिखते थे, उच्च संस्कृति और विज्ञान सिखाते थे और यहाँ तक कि देश के लिए कानून भी स्थापित करते थे। मीना उत्कृष्ट नाविक थे। फारस की खाड़ी में बहरीन द्वीप पर बसे आदि-भारतीयों की विशाल बस्ती, पूर्व से आने पर मुख्य भूमि तक पहुँचने के लिए केवल एक सीढ़ी का काम करती थी। अन्य द्रविड़ जनजातियाँ भी भारत से यमन, जो भविष्य में मिस्रियों का पंट देश बना, पर उपनिवेश स्थापित करने के लिए रवाना हुईं। "पेरिप्लस ऑफ़ द एरिथ्रैकन सी" में ऐडेंमन शहर की स्थापना का वर्णन है, जो आधुनिक अदन, यमन के मीनावासियों के व्यापार का केंद्र था। इस प्रकार: "इसे ऐंडेमन इसलिए कहा जाता था क्योंकि इस शहर के शुरुआती दिनों में, जब भारत से मिस्र के लिए यात्रा शुरू नहीं हुई थी, और जब लोग मिस्र से समुद्र पार (भारत के) बंदरगाहों तक जाने का साहस नहीं करते थे, बल्कि सभी एक साथ इस स्थान पर आते थे, तो यह दोनों देशों का माल स्वीकार करता था, ठीक उसी तरह जैसे अब अलेक्जेंड्रिया

विदेश और मिस्र दोनों से लाई गई वस्तुओं को स्वीकार करता है।", जिनका गंधरस और लोबान के व्यापार पर एकाधिकार था क्योंकि वे उत्पादक क्षेत्रों से कारवां मार्गों पर नियंत्रण रखते थे। यही लेखक इन मीनावासियों और क्रेते के राजा मिनोस के बीच विद्यमान संबंधों की भी पुष्टि करता है। भविष्यवक्ता एज़ेकिएल इस तथ्य का स्मरण करते हैं कि उनके व्यापारिक अभियान फोनीशियन शहर टायर तक पहुँचते थे। जैसा कि ऊपर देखा जा सकता है, इन मीनाई लोगों ने अंततः लाल सागर पार किया और नील नदी के तट पर अधिकार कर लिया, जहाँ उन्होंने अद्भुत मिस्री सभ्यता को फलने-फूलने दिया।[42]

हड़प्पावासी मीना,प्रोटो द्रविड़ थे, वे ही सभ्यता के वास्तविक निर्माता थे। उन्होंने ही बेबीलोनिया, अरालना, मिस्र आदि को उपनिवेश बनाया था। मिनोअन सभ्यता मूल मोहनजोदड़ो संस्कृति की ही एक शाखा की प्रतीत होती है। इसी वृक्ष की एक और शाखा स्पेन की इबेरियन सभ्यता होगी। दक्षिणी अरब के मीनाई और प्राचीन यूनान के मिनियन "संभवतः भारत के प्राचीन मीनाओं के दो उपनिवेश थे"। मेसोपोटामिया के सुमेरियन, प्राचीन मिस्रवासी, हित्ती, फोनीशियन, क्रीट के मिनोअन और महाद्वीपीय यूनान के माइकेनियाई, इटली के एट्रस्केन और स्पेन के इबेरियन, महान प्रोटो-इंडियन परिवार की ही कई शाखाएँ थीं।" अंततः ये प्रोटो इंडियन ग्रेट ब्रिटेन, आयरलैंड और स्कैंडिनेविया तक पहुँच गए। ड्र्यूड्स का नाम द्रविड़ का ही एक बिगड़ा हुआ रूप है, राजवंश-पूर्व काल में इस पर असंख्य आदि-भारतीय जनजातियों ने आक्रमण किया उन सभी के नाम किसी न किसी पशु या पौराणिक प्राणी के नाम पर रखे गए थे, जैसे मछली, नाग, गरुड़, मकर, बैल, सिंह और पक्षी।[43]

प्रो. लैंगडन के अनुसार, मोहनजोदड़ो में हमें चित्रलिपि मिलती है ये मूल चिह्न थे जिनसे सुमेरियन चिह्न विकसित हुए। एशमोलियन संग्रहालय की किश पट्टिका इन दो प्रकार की लिपियों के बीच की कड़ी है।[44]

सर आर्थर इवांस द्वारा नोसोस स्थित मिनोस के महल के स्थल पर खोदी गई वस्तुओं में, एक छोटी हाथीदांत की मुहर है जो एक जहाज़ और दो मछलियों को दर्शाती है। इन दो मछलियों में से एक जहाज़ के नीचे है, जबकि दूसरी कुछ आगे है, जहाज़ के ठीक सामने, मानो वह उसे पानी में ले जा रही हो। लेकिन इस दूसरी मछली की सबसे दिलचस्प बात यह है कि यह पहली वाली से काफ़ी अलग है। ऐसा प्रतीत होता है कि कलाकार ने मुहर को उकेरते समय जानबूझकर उस पर दो मछलियाँ उकेरी थीं दूसरी मछली कोई मछली नहीं है, बल्कि दूसरी मछली की तरह प्रारंभिक दीवार पर बनी "द ग्रेट फोह" है, यानी क्रेते के उस मिनोअन युग की, यह कोई साधारण मछली नहीं है। इस दूसरी मछली के सिर के ऊपर एक सींग है, सुमेर और मोहनजोदड़ो दोनों में पाया जाता है। सुमेर में इसे गैल लिखा जाता है, मोहनजोदड़ो में इसे प्रति लिखा जाता है, और दोनों लिपियों में इसका अर्थ "महान" है। इसलिए यह जलप्रलय की "महान मछली" है और जहाज के साथ इसकी स्थिति दर्शाती है कि मछली जहाज को रास्ता दिखा रही है, जैसा कि भारतीय जलप्रलय की कहानियों में वर्णित है।

आधुनिक अज़रबैजान या संस्कृत शब्द आर्यबीजम "आर्यों का बीज" को कुछ लोग आर्यों का प्राचीन निवास मानते हैं। अज़रबैजान मत्स्यों का देश था, क्योंकि एक कथा है कि जब वेदों को दैत्य हयग्रीव ने चुरा लिया था; मत्स्य राजा ने युद्ध में उसे मार डाला और वेदों को पुनः प्राप्त किया। हालाँकि, अज़रबैजान नाम से

ही यह स्पष्ट होता है कि उस संकट के समय आर्य संस्कृति का बीज वहाँ सुरक्षित था। जब संकट टल गया, तो आर्य राजा वापस लौटे, उन्होंने उस नई प्राप्त भूमि पर एक नया नगर बसाया, और वे वैवस्वत मनु के रूप में वर्तमान काल के विधि-निर्माता हुए।[45]

टोगो में मीना या जेन मीना नामक जातीय समूह वास्तव में एक समरूप जातीय समूह नहीं है, बल्कि भिन्न- भिन्न छोटे समूहो (विस्तृत जातीय) का मिश्रण है।वास्तव में यह जातीय समूह कई कुलों (छोटे उपसमूह) के संलयन से पैदा हुआ है

मीना जनजाति मत्स्य प्रदेश की शासक रही है। क्षेत्रीय शासकों द्वारा छल-कपट से राज्य हड़प लेने के बाद इनकी आर्थिक स्थिति अत्यंत दयनीय हो गई थी। मीना एक प्रोटो-द्रवड़ियन जाति है जो इस धरती पर गुफाओं में निवास करते थे सिन्धु सभ्यता मीनाओ द्वारा विकसित सभ्यता थी विश्व के प्रसिद्ध इतिहासकारों ए पी करमाकर ह्यूग फॉक्स बी सी लॉ आन्द्रे डी पनिया गुहा आदि मीनाओ के बारे में विस्तार से वर्णन करते हैं भारतीय मीना जाति का इतिहास बहुत प्राचीन और गौरवपूर्ण है मीनाओ द्वारा सभ्यताओं का विकास किया , विदेशी धरती पर कई देशों में आरम्भिक राज्य मीना लोगो से सम्बन्धित थे मीना प्राचीन काल में समुद्री व्यापारी थे प्रोटो-द्रविड़ मीना जाति के लोग कई शानदार राष्ट्रों की माँ (निर्माता) थी जिन्होंने भारतीय सभ्यता को "सात समुद्रों" के पार फैलाया। मीना मूल के भारतीयों और मिस्रवासियों के आदिम धर्मों के बीच सामंजस्य, दोनों लोगों की पूर्व एकता का प्रमाण है, या यूँ कहें कि इस बात की पुनः पुष्टि है कि मिस्रवासी केवल भारत के क्षेत्रों से आए प्रवासी थे, जो " महान राष्ट्रों की जननी" है।

REFERENCE BOOKS

1. जर्नल ऑफ दी रॉयल एशियाईटिक सोसाइटी ऑफ द ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड फॉर 1919 पेज -516
2. अल्फ्रेड मौरी, फ्रांसिस पुल्स्की और ऐटकेन मेग्स-- इण्डीजीनस रैसेज ऑफ दी अर्थ पृष्ठ 514
3. 1 द प्रोसिडिंग ऑफ द इंडियन हिस्ट्री कांग्रेस छठा सत्र् 1943 पृष्ठ -131 एवं II. राधा कमल मुखर्जी ,भारतीय सभ्यता का इतिहास भाग-I (1958) प्रकाशन तिथि 1958, पृष्ठ 125
4. क्लाइड ई. कीलर, सीक्रेट्स ऑफ क्यूना अर्थमदर , एक्सपोज़िशन प्रेस न्यूयॉर्क 1960 पृष्ठ -278
5. द अमरीकन नेशन्स और आउटलाईन ऑफ दियर जनरल हिस्ट्री एन्सीयेटं एंड मोर्डन् वॉल्यूम द्वितीय पेज 220
6. व्हीलर जे. टैलबॉयज़, -ए शॉर्ट हिस्ट्री ऑफ़ इंडिया एंड ऑफ द फ्रेन्टियर स्टेटस अफगानिस्तान नेपाल एंड बर्मा, 1880
7. चंद्रा चक्रवर्ती- द रेशियल हिस्ट्री ऑफ इंडिया ,पेज 136 व 342
8. आंद्रे डी. पनियागुआ, लेस टेम्प हेरोइक्स 1901 पेज 576

9. कवरपाल सिंह, पांडव गाथा पृष्ठ 57
10. नंदिकेश्वर की लिंगधारणचंद्रिका (अनुवादक एम. आर. सखारे,) 1901 , पृष्ठ 82,83,105,106
11. गोएट्ज़ हरमन। बीकानेर राज्य की कला और वास्तुकला। बीकानेर राज्य सरकार और रॉयल इंडिया एंड पाकिस्तान सोसाइटी के लिए बी. कैसरर द्वारा 1950 में प्रकाशित।
12. सेलटोरे, आर. एन, द मीना इन ट्रेडीशन एंड हिस्ट्री, न्यू इंडियन एंटीक्वेरी 1939-40, वो. 2. पू. 389
13. हेरास बंबई विश्वविद्यालय के शिलालेख जर्नल, खंड V, भाग I, पृष्ठ 10 से 11 के अनुसार मोहनजोदड़ो के लोगों का धर्म ,मोहनजोदड़ो में वेलालास
14. कनकसाभाई, बी., द तमिल एटीन हंडरेड इयर्स एगो, द साउथ इंडिया शैव सिद्धान्त वर्क्स पब्लिशिंग सोसाइटी, तिन्नेवली, लिमिटेड,
15. _बुलेटिन, सोसाइटी प्री-हिस्टोरिक फ़्रैन्काइज़ VII प्रकाशन 1909
16. गायत्री देवी (जयपुर महारानी),मेरी स्मृतियाँ, 1994, दूसरा संस्करण पेज नम्बर 65
17. कॉलवेल, चार्ल्स ,ई. ,द आटोबायोग्राफी ऑफ जनरल सर ओ मूर क्रेग & 17A कलकत्ता रिव्यू 1897-04: खंड 104 अंक 208 प्रकाशन तिथि 1897-04 पृष्ठ 331
18. लुईस रूसेलेट , ल'इंडे देस राजह्स: वॉयेज डान्स ल'इंडे सैंट्रेल एट डान्स लेस प्रेसीडेंस डे बॉम्बे एट डु बेंगाले प्रकाशन 1877 पृष्ठ 270 ,& 18 A श्लागिन्टवेइट एमिल 1835-1904 ,इंडियन इन वॉर्ट अंड बिल्ड. इआइन शिल्डरुंग देस इंडिसचेन कैसररेइचेस पृष्ठ 134
19. एडवर्ड बालफोर, साइक्लोपीडिया आंफ इंडिया एण्ड ईस्टर्न साउथरन ऐशिया, द्वितीय संस्करण, खंड III, पृष्ठ 211
20. करमारकर ए पी ,भारतीय लोककथाओं में मछली और अथर्ववेद का युग
21. राठ में उत्खनन, आर्क, विभाग, जयपुर, पृष्ठ 28,30
22. हरमन्स, इंडो-तिब्बती इंडो-तिब्बती और मंगोलोइड प्रोब्लमस इन साउथर्न हिमालयस एंड नॉर्थ नॉर्थईस्ट इंडिया पी- 83
23. हुकुम चंद पटयाल, गोपथा ब्राह्मणम् अनुवाद पृष्ठ 138 (lxxxviii)
24. जर्नल ऑफ एशियाटिक सोसाइटी बंगाल 1832-36 पृष्ठ 83
25. एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका खंड-I एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका कंपनी, लंदन द्वारा प्रकाशन 1768 पेज 738
26. अरबन डायनामिक्स इन हरियाणा इन मिडाईवल इण्डिया अध्या भारती सक्सेना सेन्टर फार हिस्टोरिकल स्टडी जेएनयू नई दिल्ली पेज 193
27. आंद्रे डी. पनियागुआ, लेस टेम्प हेरोइक्स 1901 पेज 9
28. ब्रूस हन्ना एच., जर्नल ऑफ द डिपार्टमेंट ऑफ लेटर्स 1921 खंड IV पेज 23
29. मूनिस रज़ा ऐजाज़ुद्दीन अहमद, ट्राइबल एटलस आफ इण्डिया , प्रकाशन 1990 पेज- 40
30. इण्डियन हिस्टोरिकल क्वाटरली ,वोल्यूम 15 पेज 167
31. द फ्रन्टियर्स ऑफ इण्डुस सिविलाइजेशन
32. ए पीप इन टू द डॉर्क पास्ट ओर ए हिस्ट्री ऑफ द व्हाइट रेस पाठक भगवान दास पेज 135
33. मार्टिन पी नील्सन द मिनोअन माईसेनियनरिलीजन एण्ड इटस सर्वाइवल इन ग्रीक रिलीजन

34. भारतीय विद्या भाग 54 पेज 12
35. क्वाटरली जर्नल ऑफ मिथिक सोसायटी, खंड 20 प्रकाशन 1929 पेज 30
36. आर्यन पथ: खंड संख्या XXIII: 7: जुलाई 1952 प्रकाशन 1952 प्रकाशक आर्य पथ कार्यालय पृष्ठ 323
37. मिथिक सोसाइटी की त्रैमासिक पत्रिका खंड XIII (वर्ष 1922-23) दक्षिण भारत में मछली और धर्म। एस. टी. मोसेस, एम.ए., एफ.जेड.एस. द्वारा (मिथिक सोसाइटी के समक्ष पढ़ा गया एक शोधपत्र)। पृष्ठ 554
38. लेस प्रीमियर्स सिविलाइजेशन्स ईट्यूड्स डी हिस्टोरी ईटी डी आर्कियोलोजी (प्रारंभिक सभ्यताएँ इतिहास और पुरातत्व अध्ययन) -लेखक फ्रांस्वा लेनोर्मेंट खंड दो पेरिस मैसोन्यूवे एटसी", 1874
39. ए.पी. करमरकर, 'मोहनजोदड़ो पहेली पर ताजा और आगे प्रकाश
40. ह्यूग फॉक्स द गॉड्स ऑफ द केटाक्लिज्म

41. डॉ। लिनी श्रीनिवासन ,देसी वर्ड स्पीक ऑफ द पास्ट, इण्डो आर्यन्स इन द ऐन्सियेंट नियर ईस्ट पेज 143

42. स्टडीज इन प्रोटो-इंडो-मेडिटेरेनियन कल्चर खंड-I (1953) हेरास रेव. एच. द्वारा
43. Anthropos vol 50 1955 पेज 991 992
44. लैंगडन, ऑप. सीआईटी., पृ. VII. सी.आई. लैंगडन, "सुमेरियन व्युत्पत्ति और वाक्य विन्यास पर नोट्स",जे.आर.ए.एस., 1933, पृ. 837-806।
45. इण्डियन हिस्टोरिकल क्वाटरली खंड 11 मार्च 1927 प्रकाशन1927 पेज 43

There are no sources in the current document.